>

Title: Need to accord the status of labourers of unorganized sector to the maid servants in the Country.

श्री वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदया, हमारे देश में झाड़ू, पोछा, बर्तन मांजने और कपड़ा धोने के काम में लगी महिलाओं की संख्या बहुत अधिक है। उन्हें असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की श्रेणी में शामिल नहीं किया गया है, इस कारण से श्रमिकों के कल्याण की योजनाओं से ये महिलायें वंचित रह जाती हैं। उस समय स्थिति और भी गंभीर हो जाती है, जब किसी परिवार का मुखिया गंभीर बीमारी से ग्रसित हो जाता है या दुर्घटना का शिकार हो जाता है और वह काम पर नहीं जा पाता है। तब ऐसी महिलाओं को परिवार चलाने के लिए और भी अधिक घरों में जाकर काम करना पड़ता है।

महोदया, मेरे सामने एक प्रसंग आया था, एक महिला का पति सड़क निर्माण के काम में लगा हुआ था, उसके पैर पर जलता हुआ तारकोल गिर जाने के कारण वह गंभीर रूप से घायल हो गया और इस कारण से वह काम पर नहीं जा पाता था। वह महिला बुखार में होने के बावजूद, जो पहले से चार-पांच घरों में काम कर रही थी, बुखार की स्थिति में भी उसको तीन और घरों में काम पर जाना पड़ा। उनके ऊपर कर्ज होने पर यह स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। उनके परिवारों की जो छोटी-छोटी बच्चियां पढ़ाई करती हैं, उनसे भी ये झाड़ू, पोछा और बर्तन मांजने का काम कराती हैं। बड़ी संख्या में ऐसी बच्चियां पाठशाला का मुंह ही नहीं देख पाती हैं। ऐसी लड़कियों की शादी करना उनकी मां को एक मुश्किल काम नजर आता है।

महोदया, मेरा आपके माध्यम से केंद्र सरकार से अनुरोध है कि घरों में काम करने वाली महिलाओं के कल्याण के लिए तथा उनकी लड़कियों की पढ़ाई एवं शादी के लिए, उन्हें असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों में शामिल कर, विकास की दौड़ में अंतिम पंक्ति से उठाकर, उनमें स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता का भाव जगाने, कल्याण संबंधी योजनाओं का लाभ दिलाने में सहयोग किया जाए।